कलियुग नहीं, यह द्वापर युग है

चन्द्र प्रकाश कुमार
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की

भारतीय जनमानस में व्यापक भ्रांति है कि हम कलियुग से गुजर रहे हैं, जो मानव इतिहास में सबसे कम चेतना (consciousness) का काल है। जब भी हमें मानव क्रूरता या उदासीनता के बारे में विशेष रूप से व्यथित करने वाली खबरें सुनने को मिलती हैं, तो हम अक्सर इसे कलियुग पर दोष देते हैं। यह कहा जाता है कि हमने कलियुग के मात्र 5000 वर्ष पार कर लिए हैं और इसके समाप्त होने में अभी 4,27,000 वर्ष और शेष हैं। यह बड़े पैमाने पर विश्वास दिलाता है कि दुखों की अवधि अभी तो शुरू हुई है, तथा समस्याएं और अधिक बदतर होती जाएंगी।

लोगों के दिमाग में यह विचार इस तरह सन्निहित है कि वे अक्सर दुनिया में होने वाले सकारात्मक परिवर्तनों की अनदेखी कर देते हैं और किसी भी प्रगति को अस्थायी या सतही रूप का मान कर खारिज कर देते हैं। हालांकि, यह सच्चाई से बहुत दूर है।

आशावाद का अंकुर

जीवन का हमारा अपना अनुभव कलियुग की इस धारणा की उपेक्षा करता है। जीवन के लगभग सभी पैरामीटर पिछले 100 वर्षों से बेहतर होते दिख रहे हैं। हमने औद्योगिक क्रांति द्वारा अर्थव्यवस्था में सुधार और जनता को अधिक शानदार जीवन शैली का आनंद लेते हुए देखा है। जबकि कुछ शताब्दियों पहले केवल राजाओं और रईसों का विलासिता पूर्ण जीवन था और अधिकतर आम जनता बेहद गरीबी का जीवन जीती थी। आज, औसत मानव जीवन की उम्र 70 साल से अधिक हो गई है और लगातार बढ़ रही है। यह इस तथ्य के विपरीत है कि 15वीं शताब्दी के यूरोप में, एक व्यक्ति को केवल 29 वर्ष की आयु तक जीने की उम्मीद थी। भले ही लोकतंत्र में बुराइयों का अपना हिस्सा हो, यह निरंकुश शासन की तुलना में कहीं अधिक सम्मानजनक और सशक्त है। शिक्षा के प्रसार के साथ, अस्पृश्यता, सती प्रथा, साथ ही जाति और लिंग के आधार पर असमानता जैसी कई सामाजिक बुराइयों को काफी हद तक समाप्त कर दिया गया है या वे बहुत कम हो गयी हैं। सामान्य तौर पर, ऐसा नहीं लगता है कि समस्याएं गंभीर हो रही हैं।

एक रहस्यवादी घोषणा

1895 में, श्री युक्तेश्वर गिरि, महान आध्यात्मिक गुरु और श्री परमहंस योगानंद (एक योगी की आत्मकथा के लेखक) के गुरु, ने अपनी पुस्तक द होली साइंसेस में घोषित किया कि कलियुग खत्म हो गया है और द्वापर युग शुरू हो चुका है। उन्होंने युगों में परिवर्तन के संभावित कारण के रूप में एक खगोलीय मॉडल का सुझाव दिया। हालांकि उस मॉडल को बाद में अमान्य कर दिया गया था, लेकिन युगीन चक्रों की घटना के बारे में खगोलविदों में भारी उत्सुकता थी। पिछले कुछ दशकों में खगोलीय ज्ञान के बढ़ने के साथ, निश्चित खगोलीय घटनाओं के आधार पर युग चक्रों को मान्य किया जा रहा है। हाल के दिनों में उत्पन्न खगोलीय साक्ष्य यह संकेत दे रहे हैं कि हम पहले से ही द्वापर युग में हैं। भले ही यह अभी भी मुख्यधारा के खगोल विज्ञान का हिस्सा नहीं है, यह उम्मीद की जाती है कि और अधिक सबूत मिलने पर, युग चक्रों को वैज्ञानिक रूप से मान्य किया जाएगा।

युग चक्रों का तंत्र

क्लासिक हिंदू ग्रंथों में 24,000 वर्षों के युग चक्रों के अस्तित्व का उल्लेख है जो बराबर अवधि के अवरोही और आरोही युग के दो हिस्सों में विभाजित हैं। इन 12,000 साल के प्रत्येक चक्र को सत युग (4800 वर्ष), त्रेता युग (3600 वर्ष), द्वापर युग (2400 वर्ष) और अंत में कलियुग (1200

वर्ष) के चार कालखंडों में विभाजित किया गया है। यह भी उल्लेख है कि सत युग में, धर्म चार पैरों पर खड़ा है; त्रेता युग में, तीन पैर; द्वापर युग में, दो पैर; और कलियुग में, सिर्फ एक पैर पर खड़ा है। जिसका अर्थ है कि युग चक्र के अवरोही क्रम में चेतना घटती चली जाती है। कलियुग में हम जिस चेतना का अनुभव करते हैं, वह सतयुग में उस अनुभव का सिर्फ एक चौथाई हिस्सा है। एक बार युग चक्र के उतरने का चरण समाप्त हो जाने के बाद, आरोही चरण में कलियुग, द्वापर युग, त्रेता युग और अंत में सत युग में चेतना बढ़ती चली जाती है।

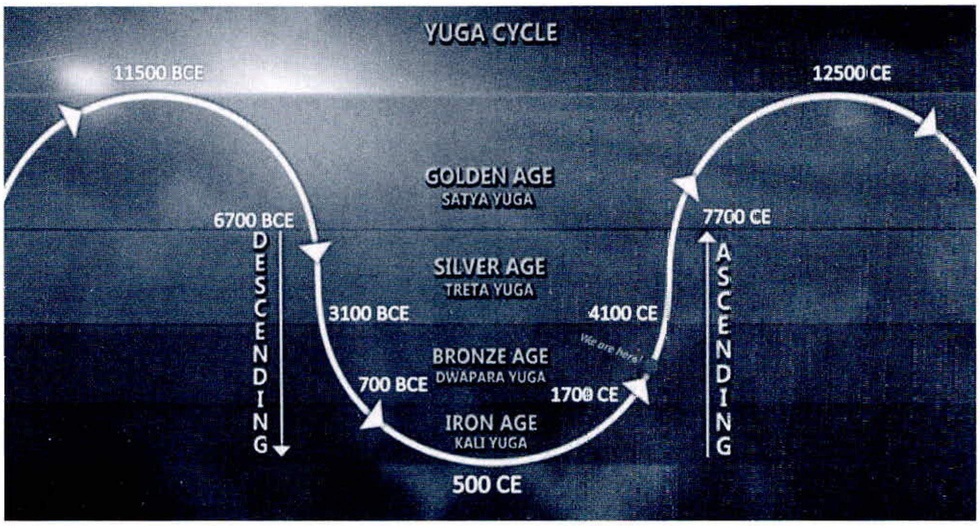

तस्वीर : 12,000 वर्ष चक्र में से प्रत्येक को सत युग (4800 वर्ष), त्रेता युग (3600 वर्ष), द्वापर युग (2400 वर्ष) और कलियुग (1200 वर्ष) के चार कालखंडों में विभाजित किया गया है।

चेतना–एक विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र (EMF)

हाल के वैज्ञानिक सिद्धांत जैसे "क्वांटम यांत्रिकी" चेतना को एक विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र के रूप में समझाते हैं। हम सभी के पास अपनी व्यक्तिगत ई.एम.एफ. (ElectroMagnetic Field) है, जिसे आध्यात्मिक रूप से आत्मा भी कहा जाता है, जो हमें मृत्यु के समय छोड़ देती है। इसी तरह, ब्रह्मांड में सर्वव्यापी ई.एम.एफ. को ईश्वर की संज्ञा दी गई है। जब व्यक्तिगत ई.एम.एफ. ब्रह्मांडीय ई.एम.एफ. के साथ सामंजस्य स्थापित करती है, तो यह ईश्वर के साथ विलय की घटना बन जाती है।

खगोलीय साक्ष्य अब सुझाव देते हैं कि एक युग चक्र जिसमें 24,000 वर्ष शामिल हैं, चेतना के ही चक्र हैं। संभवतः जैसा ई.एम.एफ. पृथ्वी पर अनुभव किया जाता है, वह युग चक्रों में 1:4 के अनुपात से परिवर्तित होता रहता है।

सूर्य–सिरियस चक्र

अधिकांश समय चक्र जैसे चंद्र माह या वर्ष किसी न किसी खगोलीय चक्र से संचालित होते हैं। उदाहरण के लिए, पृथ्वी द्वारा सूर्य की परिक्रमा करने के लिए लिया गया समय एक वर्ष होता है, जो कि मौसम में परिवर्तन का कारण बनता है। इसी तरह, युग चक्रों के पीछे भी एक खगोलीय घटना होती है। समय के साथ, यह स्पष्ट हो रहा है कि सूर्य पूर्व के ज्ञानानुसार स्थिर नहीं है, बल्कि अपने binary साथी (जिसे सीरियस कहा जाता है) के साथ एक चक्र में चलता है और यह चक्र 24,000 वर्षों तक चलता है। इस चक्र के दौरान, आधे समय के लिए, सूर्य और

सीरियस एक दूसरे के करीब आते हैं जो कि युगों का आरोही (ascending) चरण होता है; दूसरे आधे भाग के दौरान, सूर्य और सीरियस एक दूसरे से दूर जाते हैं, जो युग चक्र के अवरोही (descending) चरण का निर्माण करते हैं। सत युग के दौरान, ये दोनों सितारे एक दूसरे के सबसे करीब होते हैं और कलियुग के दौरान, वे सबसे दूर होते हैं।

आरोही युग–सूर्य और सीरियस निकट हो रहे हैं

हम वर्तमान काल में युग चक्र के आरोही चरण में हैं। इसके लिए उचित साक्ष्य डॉपलर प्रभाव द्वारा प्रदान किया जा रहा है। इसके अनुसार, पृथ्वी से दूर जाने वाले तारे लाल रंग के दिखाई देते हैं और जो पास आ रहे हैं वे नीले दिखाई देते हैं। रात में आकाश के अधिकांश तारे लाल दिखाई देते हैं क्योंकि विस्तारित ब्रह्मांड उन्हें पृथ्वी से दूर जाने का कारण बनता है। हालाँकि, वर्तमान में, सीरियस आकाश का सबसे चमकीला नीला तारा है, जिसका अर्थ है कि यह पृथ्वी के करीब आ रहा है, जो हमें आरोही युग चक्र का हिस्सा बनाता है। प्रसिद्ध खगोलशास्त्री, क्लोडियस टॉलेमी ने अपनी प्रसिद्ध खगोल विज्ञान की पाठ्यपुस्तक अल्मागेस्ट में, जो कि लगभग 2000 साल पहले लिखी गई थी, उसमे सीरियस को लाल रंग का बताया था। इसका मतलब है कि 2000 साल पहले, सीरियस पृथ्वी से दूर जा रहा था और हम उस समय एक अवरोही युग चक्र में थे। सातवीं शताब्दी के आसपास लिखे गए कई चीनी और अरबी ग्रंथों में सीरियस को सफ़ेद रंग का बताया गया है। इसका मतलब है कि उस वक़्त सीरियस गति में लगभग स्थिर था, जो कि चक्र के सबसे निचले भाग में होता है। यह श्रीयुक्तेश्वर की उद्घोषणा के अनुरूप है कि कलियुग छठी शताब्दी में सबसे निचले स्तर पर था।

सीरियस सी (ई.एम.एफ. को प्रभावित करने वाला)

अब महत्वपूर्ण सवाल यह है कि सूर्य और सीरियस के बीच की बदलती दूरी के कारण चेतना या इलेक्ट्रो–मैग्नेटिक क्षेत्र में उतार–चढ़ाव क्यों होना चाहिए? आइए सीरियस के ई.एम.एफ. विवरण पर गौर करें जिसमें तीन सितारे शामिल हैं–सीरियस ए, सीरियस बी, और सीरियस सी। सीरियस ए में लगभग 50 G (गॉस) का चुंबकीय क्षेत्र हैं, जो कि सूरज की 5 से 20 G की ई.एम. एफ. की सीमा के काफी करीब है और पृथ्वी की सतह की ई.एम.एफ. लगभग 1 गॉस है। सीरियस बी एक स्टार है जिसे "सफेद बौना" के रूप में वर्गीकृत किया गया है, जिसमें ई.एम.एफ. एक मिलियन गॉस की सीमा में है। भले ही सूरज और पृथ्वी की तुलना में इस तरह की ई.एम.एफ. काफी विशाल है, लेकिन यह लगभग 8.6 प्रकाश वर्ष की दूरी पर होने के कारण पृथ्वी की ई.एम. एफ. पर अधिक अंतर नहीं डाल सकता है।

भले ही सीरियस सी को कभी स्पॉट नहीं किया गया हो, लेकिन इसके अस्तित्व के साक्ष्य सीरियस ए और बी की कक्षीय विशेषताओं पर इसके प्रभाव द्वारा प्रकट होते हैं। यह सम्भावना है कि यह एक न्यूट्रॉन स्टार है, जो बेहद छोटा है, जिसका व्यास लगभग 10 किमी है और इसका भार सूरज की तुलना में डेढ़ गुना है। ये तारे बेहद काले होते हैं, लगभग ब्लैक होल की तरह, और इसलिए इनका पता लगाना असंभव है। न्यूट्रॉन स्टार की ई.एम.एफ. लगभग एक ट्रिलियन गॉस के आसपास होती है, जो बहुत विशाल होती है, और इतनी विशाल दूरी से भी पृथ्वी पर पर्याप्त प्रभाव पैदा कर सकती है। यदि सूरज और सीरियस के बीच की अधिकतम दूरी उनकी निकटतम दूरी से दोगुनी है, तो सीरियस के कारण अनुभव किया गया ई.एम.एफ. चार गुना तक बदल सकता है, क्यों कि ई.एम.एफ. दूरी के वर्ग के व्युत्क्रमानुपाती होता है। इसलिए, यह समझा जा सकता है कि 24,000 वर्षों के युग चक्र की अवधि में सूर्य और सीरियस के बीच की भिन्नता, विद्युत–चुंबकीय क्षेत्रों में भारी बदलाव का कारण बनेगी, जिसके परिणामस्वरूप चेतना में बड़े परिवर्तन दिखाई देंगे।

चेतना–एकता का बल

उच्च चेतना के समय में, मनुष्यों, प्रकृति, जानवरों और यहां तक कि दिव्य प्राणियों सहित सभी के बीच एकता की एक मजबूत भावना और गहन सामंजस्यता रहती है। जब चेतना कम होने

लगती है, तो प्राणियों को एक–दूसरे से अलगाव महसूस होने लगता है, जो सभी प्रकार के संघर्षों का कारण बनता है। उच्च चेतना की अवधि में, मनुष्य एक–दूसरे की बहुत देखभाल करते हैं और रचनात्मक प्रेरणाओं से संचालित होते हैं। यहां तक कि दिव्य प्राणी भी अत्यधिक जागरूक मनुष्यों के करीब महसूस करते हैं और उनकी साझेदारी में काम करते हैं। प्रकृति अपने दिव्य पहलू को प्रकट करती है; इसलिए आपदाएँ लगभग अनुपस्थित होती हैं। मनुष्य प्यार को बाहरी संपत्ति की अपेक्षा अधिक महत्व देता है, जिससे समाज काफी हद तक शांतिपूर्ण और खुशहाल हो जाता है।

सत युग पूर्ण सामंजस्य और सदभाव का समय माना जाता है। उस काल में प्रकृति ने सभी के लिए पर्याप्त भोजन का उत्पादन किया। किसी को भी जीवित रहने के लिए कठिन परिश्रम नहीं करना पड़ा, और काम खेलने के समान आनंददायक था। मनुष्य आसानी से दुनिया को समझ सकते थे; इसलिए कोई आश्चर्य नहीं कि उपनिषद–सभी आध्यात्मिक ग्रंथों में सबसे अधिक व्यावहारिक और रहस्यमय – इसी अवधि के दौरान लिखे गए थे। त्रेता युग के प्रारम्भ होने पर, दिव्यता का अनुभव इतना आसान नहीं रहा। फिर भी, कोई ध्यान केंद्रित कर सकता था और दिव्यता के रचनात्मक पहलू का अनुभव कर सकता है। इस अवधि के दौरान वेदों को लिखा गया था और ब्रह्मा (निर्माता) सबसे अधिक पूजे जाने वाले देवता थे। द्वापर युग में, चेतना और अधिक कम हो गई, और बुरी शक्तियां चेतन प्राणियों से शक्ति छीनने लगीं। यही कारण है कि श्रीकृष्ण–भगवान विष्णु के सर्वोच्च रूप–उस समय में अवतरित हुए, और बुराई पर अच्छाई की जीत सुनिश्चित की। फिर कलियुग आया, चेतना के क्षीण होने का समय। बुद्ध, विष्णु के नौवें अवतार, यह संदेश देने के लिए अवतरित हुए कि जागरूक लोगों को दुनिया से दूर होकर अपने कर्मों की शुद्धता पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। कलियुग के दौरान, बुराई इतनी शक्तिशाली थी, कि सचेत लोगों के लिए उनका विरोध करना संभव नहीं था, और जीवित रहने का सबसे अच्छा तरीका दुनिया में अपनी भूमिका को कम करना था। कलियुग के दौरान अवचेतन मन (subconscious mind) चेतन मन (conscious mind) की तुलना में अधिक शक्तिशाली हो गया था। यही कारण है कि शिव का उग्र रूप रुद्र, सबसे अधिक पूजनीय देवता बन गया, क्योंकि केवल वह ही ऐसे कठिन समय में मानव अस्तित्व को सुरक्षित रखने में मदद कर सकता था, और जागरूक लोगों को बुरी ताकतों पर नियंत्रण रखने के लिए जागरूकता पैदा कर सकता था।

नए सृजन का युग

वर्तमान में, हम मानव इतिहास के बारे में जो कुछ भी जानते हैं, वह लगभग पूरी तरह से अवरोही चरण का है। चूँकि अवरोही चरण में चेतना लगातार समय के साथ कम होती रहती है, इसीलिये अतीत हमेशा भविष्य से बेहतर होता है। इसलिए प्राचीन और पारंपरिक मूल्यों को संरक्षित करने पर ध्यान दिया जाता है। इसके विपरीत, आरोही युग चक्र के दौरान, चेतना लगातार बढ़ती रही है, जिससे भविष्य हमेशा अतीत की तुलना में उज्जवल होता है। कोई आश्चर्य नहीं, कि जब हम आरोही युग में प्रवेश करते हैं, तो हमें नए और पुराने के बीच टकराव का सामना करना पड़ता है। धर्म, शासन, समाज, परिवार और शिक्षा के अतीत के संस्थानों को अवरोही युगों के दौरान बनाया गया था, और उनका मुख्य उद्देश्य कठिन समय से बचने में हमारी मदद करना था। आरोही युगों के उत्थान के साथ, हम अब अपने अतीत से बंधे नहीं रहना चाहते हैं और नए रूप में विकसित होना चाहते हैं। फोकस का ऐसा बदलाव वास्तव में अराजक है, जैसा कि हम अपने चारों ओर देख रहे हैं। फिर भी, यह अराजकता खराब नहीं है; बल्कि आगे आने वाले बेहतर समय का एक अग्रदूत है।

आरोही द्वापर युग

भारतीय लोग द्वापर युग को भगवान कृष्ण के साथ घनिष्ठता से जोड़ते हैं। इसलिए, जब भी द्वापर युग के आगमन का उल्लेख किया जाता है, तो कई लोग सोचते हैं कि यह कृष्ण के जन्म और महाभारत के युद्ध के समान होगा। हालाँकि, ऐसी धारणा भ्रामक हो सकती है। कुछ समानताएँ होने के बावजूद, द्वापर युग के आरोही और अवरोही काल में कई विरोधाभास हो सकते हैं। दोनों

द्वापर युगों की प्रमुख विशेषता अच्छाई और बुराई के बीच का संघर्ष है, जिसके माध्यम से अंत में अच्छाई की विजयी होती है। हालांकि, दोनों में संघर्ष की प्रकृति काफी अलग हो सकती है।

इन दोनों युगों के बीच सबसे बड़ा अंतर यह है कि अवरोह के दौरान इससे निपटने के लिए शायद ही कोई अवचेतन कंडीशनिंग (sub–conscious conditioning) थी। लेकिन आरोह काल में, मानवता को कलियुग की लंबी अवधि में उत्पन्न होने वाली एक सामूहिक उप–चेतना (collective sub–conscious) के साथ–साथ एक अत्यधिक अनुकूलित (conditioned) व्यक्ति की व्यापक चुनौती का सामना करना पड़ रहा है। आरोही चेतना के दौरान, भविष्य हमेशा अतीत से बेहतर होता है; इसलिए, सचेत लोग अतीत पर पकड़ बनाने के बजाय कुछ नया करने के लिए कृतसंकल्प रहते हैं। इसलिए, आरोही द्वापर युग में यूटोपियन (आदर्श सुधारक) आध्यात्मिक, सामाजिक, और पारिवारिक संस्थानों का उद्भव होगा, जो व्यक्तिगत और सामूहिक रचनात्मक क्षमताओं को उजागर करने में सहायक होगा। कोई आश्चर्य नहीं, आरोही युग चक्र की शुरुआत के साथ, हम पारंपरिक ताकतों और यूटोपियन के बीच इस संघर्ष को देख रहे हैं। वर्तमान में, भले ही पारंपरिक ताकतें बहुत मजबूत दिखाई देती हैं, लेकिन हम इस बात के गवाह रहेंगे कि यूटोपियन सेना धीरे–धीरे आरोही द्वापर युग की इस शानदार अवधि में विजयी होगी।